इकाई 1 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान अर्थ; क्षेत्र और प्रासंगिकता

इकाई की रूपरेखा

1.0 प्रस्तावना

1.1 समाज और संस्कृति

1.2 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान

1.3 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान का क्षेत्र

1.4 सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान की प्रासंगिकता

1.5 सारांश

1.6 सन्दर्भ

1.7 प्रगति की जांच हेतु उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद शिक्षार्थी सक्षम होंगे :

- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान की व्याख्या करने में;
- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के बीच अंतर करने के कारणों को समझाने में कि किस संदर्भ में इन विषयों को विकसित किया गया है;
- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान सीखने के अनुप्रयोग या दायरे को समझाने में; तथा
- यह समझाने में कि सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान में प्रशिक्षित होना क्यों महत्वपूर्ण है।

1.0 प्रस्तावना

सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के बारे में जानने के लिए विद्यार्थी को पहले समाज के बारे में जानना चाहिए और यह भी जानना चाहिए कि संस्कृति क्या है? उस का क्या संबंध है और वे किस प्रकार से इस विषय से भिन्न है। हम में से अधिकांश लोग इन संस्थाओं को जीवन के रूप में देखते हैं, हम इस तथ्य पर कभी भी ध्यान केन्द्रित नहीं करते कि समाज और संस्कृति प्राकृतिक पर्यावरण की तरह नहीं हैं, वे प्रदत्त नहीं है और वे किसी भी दिव्य हस्तक्षेप से नहीं बनाए गए हैं। हालांकि लंबे समय तक लोग मानते थे कि समाज भगवान की एक रचना थी और संस्कृति भी कुछ ऐसी ही थी जिसे दैवीय ठहराया गया था। आइए

योगकर्ता : प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

उदाहरण हेतु भोजन की बात करें, या उसकी बात करें जो हम खाते हैं। वास्तव में दुनिया भर में अधिकांश लोग वही खाते हैं जिसे वे खाने योग्य मानते हैं , दूसरे शब्दों में केवल कुछ खाने योग्य होता है, जिसे एक मानव शरीर पचा सकता है, लेकिन कुछ ऐसे हैं जिन्हें विश्वास है की सब कुछ खाया जाना चाहिए। इसी प्रकार ऐसे खाद्य पदार्थ भी हैं जो जैविक अर्थों में भोजन नहीं होते हैं, पर लोगों का एक समूह उसे भोजन मानता है ,तो दूसरा नहीं। कई लोगों को उनका धर्म कुछ चीजों को खाने से मना करता है और वर्जित खाद्य पदार्थों को खाना एक पाप की श्रेणी में रखा जाता है।

लेकिन अगर हम इन सभी वर्जित बातों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और बौद्धिक दृष्टिकोण से उनकी जांच करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इन्हें धर्म नहीं बल्कि संस्कृति के माध्यम से मना किया जाता है। ये सांस्कृतिक निषेध अक्सर इतिहास का एक उत्पाद होते है या परिस्थितियों का एक उत्पाद है, और इनमें तर्कसंगतता की बात हो सकती हैं। (हैरिस **1985**) फिर समाज और संस्कृति क्या है, इस पर ध्यान देते हुए हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि ये मानव रचनाएं हैं, लेकिन यह निश्चित रूप से तर्कसंगत नहीं हो सकती है कि ऐतिहासिक समय पर विकसित होने वाले सामाजिक उथल–पुथल के चलते यह निश्चित रूप से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ के अंतर्गत हैं। यह भी सत्य है, न तो समाज और न ही संस्कृति स्थिर है। वे समय के साथ विकसित होते हैं और बदल जाते हैं। किसी एक समय में जिसे गलत माना जाता है, वह दूसरे समय सही हो जाता है। इस इकाई में हम इन अवधारणाओं की गहन जांच करेंगे।

1.1 समाज और संस्कृति

हर शिशु सामाजिक संबंधों की एक बनी बनाई व्यवस्था में पैदा होता है, जिसमें जन्म के साथ ही उसके कुछ रिश्तेदार होते हैं, जैसे उसके माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी और अन्य। इस प्रकार ये रिश्तेदार संबंधों के एक बड़े समूह का हिस्सा बनते हैं जिसे हम एक रिश्तेदारी का तंत्र (नेटवर्क) कहते हैं। जो एक कबीले या जाति जैसे बड़े समूह का भी हिस्सा हो सकते है। हम सब के पास एक समाज है जिसमें एक विशिष्ट जनजाति, कोई जातीय समूह या एक देश, राष्ट्र या भाषाई समुदाय की तरह पहचान होती है। किसी समूह से संबंधित भावना को सामाजिक पहचान कहा जाता है। इस पहचान में कई परतें हो सकती हैं। इस तरह यदि कोई भारतीय है, तो हम यह कह सकते हैं कि हम भारतीय समाज से संबंधित हैं। भारतीय समाज के भीतर, हम कह सकते हैं कि हम किसी एक धार्मिक समुदाय के हैं, जैसे की हिंदू या ईसाई होने के नाते हम किसी जनजाति या जाति समूह से संबंधित हो सकते हैं।

प्रत्येक स्तर पर हम कह सकते है कि समाज रिश्तों का एक तंत्र (नेटवर्क) है और रिश्तों का एक विशेष सेट/समुच्च्य हमें एक विशेष पहचान देता है। कुछ पहचान वे हैं जिनके साथ हम पैदा हुए हैं, इन्हें निर्धारित रूप में जाना जाता है। और कुछ पहचान वे हैं जिन्हें हम बाद में जीवन से अर्जित करते हैं और इन्हें अर्जित पहचान के रूप में जाना जाता है। जिन पहचानों के साथ हम पैदा हुए हैं, वे हमें एक विशेष प्रकार के व्यक्ति बनाते हैं। किसी विशेष भाषा या यहां तक कि भाषाओं को बोलने, एक प्रकार का भोजन करने, जीवन को विशेष तरीके से जीने और विशेष देवताओं की पूजा–अर्चना करने और कुछ चीजों में विश्वास करना सम्मिलित है। इस अंतिम पहलू को विश्व दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। हम में से प्रत्येक जिस दुनिया में रहते हैं उसके बारे में एक विशेष संज्ञान है और हमारे पास जीवन की परिस्थितियों से निपटने हेतु निर्धारित तरीके हैं।

इस तरह हम रिश्तों के एक प्रवृत्ति में पैदा होते है जिन्हें हम समाज कहते हैं। एक विशिष्ट समय और स्थान में पैदा होने के आधार पर हम ऐसा करने और सोचने के कुछ तरीके प्राप्त करते हैं जिसे हम संस्कृति कहते हैं। संस्कृति जीवन का एक तरीका है, कार्यों को करने का एक अभ्यास है, और अर्थों का एक समुच्च्य है जिसे हम अपने आस–पास की दुनिया पर आरोपित करते हैं। वह संस्कृति ही है जिसके माध्यम से हमारे चारों ओर सबकुछ अर्थपूर्ण हो जाता है। वह संस्कृति है जो एक दूसरे से अलग बनाती है, वह अर्जित की जाती है और यह अनुवांशिक गुण नहीं है।

मनुष्य के रूप में हम एक प्रजाति है और एक प्रजाति के रूप में हमारे आम लक्षण हैं। इन मानवीय लक्षणों में से एक क्षमता प्रतीकात्मक व्यवहार या अमूर्त सोच की क्षमता है। मनुष्य कल्पना कर सकते हैं, वे वस्तुओं और उसके अर्थ का भी पता लगा सकते हैं। इस तरह इंसान, भाषा को नियोजित कर सकता है उसे जहां लगता है वह मनमाने ढंग से उन्हें अर्थ प्रदान करने लिए प्रयोग कर सकता हैं । यही कारण है कि वह बहुत सारे हैं, वास्तव में कई मानव भाषाएँ, एक दूसरे से अलग है । इस तरह इंसानों की ध्वनि भाषा के रूप में व्यवस्थित हो सकती है। जहां ध्वनियां वह अर्थ ले लेती हैं, जो उन्हें मनमाने ढंग से सौंपा जाता है। यही वजह है कि अनेक भाषाएँ हैं, वास्तव में कई मानव भाषाएँ दूसरे से अलग हैं । उदाहरण हेतु हम अलग–अलग तरीकों से किसी मेंढक को मेंढक कह सकते हैं और यह संभव है। क्योंकि इनमें से कोई भी ध्वनि अलग–अलग भाषाओं में मेंढक हेतु प्रयुक्त नहीं है पर किसी भी तरह से वह ध्वनि मेंढक के नाम से संबंधित है। यही कारण है कि मनुष्य के प्रजाति के रूप में सबसे अधिक विविधता हमारे भोजन करने, कार्य करने और जीवन यापन में दिखती है। हम अपने आनुवंशिकी या प्रवृत्ति से नहीं रहते हैं, अपितु एक स्व–अधिग्रहीत तंत्र के माध्यम से रहते हैं जिसे संस्कृति कहा जाता है। (कापलान और मैनर्स 1972) लेकिन, किसी संस्कृति हेतु उसे किसी समाज का हिस्सा भी होना चाहिए। क्योंकि, पहले से ही सांकेतिक संस्कृति एक अंतर्निहित विशेषता नहीं है, संस्कृति का अधिग्रहण किया जाता है और मानव किस प्रकार संस्कृति अधिग्रहित करता है, यह समाज में पैदा होने और जीवन यापन पर निर्भर करता है। हम समाज में इस तरह से जीना सीखते हैं कि समाज स्वयं को पुनरू सर्षजित कर सकें। हम सभी को उन नियमों के अनुसार व्यवहार करना सीखना होता हैं जिन्हें, हम सामाजिक मापदंड कहते हैं। इन सामाजिक मापदंडों और नियमों को उन प्रक्रियाओं को संचरण (transmission) के माध्यम से अधिग्रहित किया जाता है जिन्हें हम समाजीकरण (socialisation) कहते हैं। या कहें जिस तरह से कोई बच्चा अपने वयस्कों को देखकर कुछ सीखता है। हम जीवन के उन तरीकों और अर्थों को भी प्राप्त करते हैं या सीखते हैं जो व्यवहार हेतु हमें रूपरेखा प्रदान करते हैं, जैसे कि क्या खाएं और कैसे खाएं, क्या पहनें और कैसे पहनें, समाज के सही सदस्य की तरह कैसे व्यवहार करें और कैसा बने और कैसा न बनें, ताकि सामाजिक रूप से बहिष्कृत न हों। आगे बढ़ने, बोलने, सामूहिक अर्थ के ज्ञान को संस्कृति के रूप में जाना जाता है और संस्कृति को प्राप्त करने की प्रक्रिया को संस्कृतिकरण कहा जाता है।

ये दोनों प्रक्रियाएं साथ साथ चलती हैं । हमने यह जाना है कि माता–पिता और बच्चे के बीच एक रिश्ता होता है, यही समाजीकरण है और हम इस रिश्ते के बीच एक उचित व्यवहार होता है और जिसे संस्कृतिकरण कहा जाता है।

प्रगति की जांच करें1

1. सामाजिक पहचान क्या है?

.....

.....

.....

2. विश्व–दृष्टि के अर्थ को समझाएं ?

.....

.....

.....

3. आप निर्धारित और प्राप्त स्थिति से क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

4. क्या संस्कृति एक आनुवंशिक रूप से विरासत में मिली विशेषता है?

.....

.....

.....

5. समाजीकरण और संस्कृतिकरण क्या है?

.....

.....

.....

6. संस्कृति एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक किस प्रकार संचारित होती है?

.....

.....

.....

1.2 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान

सामाजिक मानवविज्ञान मुख्य रूप से सामाजिक संबंधों के अध्ययन से जुडा हुआ है। इस अध्ययन में परिवार, रिश्तेदार, मानदंडों और व्यवहार के नियमों और संरचनाओं का अध्ययन करते हैं जो समाज का गठन करते हैं।

सांस्कृतिक मानवविज्ञानी, प्रतीकों और अर्थ प्रणालियों का अध्ययन करते हैं और वे उन मूल्यों और मान्यताओं का अध्ययन करते हैं जो अंतर्निहित सिद्धांत हैं, जो प्रक्रिया का मार्गदर्शन करते हैं। हालांकि दोनों संबंधित शाखाएं विभिन्न पहलुओं पर जोर देती हैं और अपने विषय वस्तु को अलग–अलग दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। उदाहरण हेतु, यदि कोई सामाजिक परिप्रेक्ष्य से राजनीतिक संस्थानों का अध्ययन कर रहा है तो वह राजनीतिक व्यवस्था की संस्थागत संरचना का अध्ययन करेगा, जैसे कि पंचायत है, फिर कर्मियों की संरचना, उनके अधिकार और कर्तव्यों, पदानुक्रम और मानदंडों और सिद्धांतों पर बातचीत आदि। यदि कोई सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से राजनीतिक क्षेत्र का अध्ययन कर रहा है, तो वह संरचनात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित नहीं करेगा बल्कि सत्ता, रणनीतियों और रणनीतियों की वार्ता पर ध्यान केंद्रित करेगा जिससे शक्ति का उपयोग किया जाता है। सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से कोई भी पदों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता है, लेकिन जिन प्रक्रियाओं से इन्हें प्राप्त किया जाता है उन पर कर सकता है। सांस्कृतिक मानवविज्ञानी उन प्रतीकों पर ध्यान केंद्रित करते है जिनके माध्यम से शक्ति प्रकट होती है और शक्ति को व्यक्त करने और बनाए रखने में अर्थों का सूक्ष्म उपयोग होता है।

ऐतिहासिक रूप से सामाजिक मानव विज्ञान परिप्रेक्ष्य फ्रांसीसी स्कूल ऑफ मास, हबर्ट और दुर्खाइम (Durkheim) के बाद ब्रिटेन और यूरोपीय महाद्वीप में विकसित किया गया था। सामाजिक मानवविज्ञान परिप्रेक्ष्य के कामकाज में ए.आर रैडक्लिफ–ब्राउन, ईई इवांस–प्रिचर्ड, ब्रोनिस्ला मालिनोव्स्की, रेमंड फर्थ और ब्रिटिश स्कूल के अन्य विद्वान थे। उन्होंने भारतीय मानवविज्ञानी जैसे, एम.एन श्रीनिवास और अन्य लोगों को प्रभावित किया। इस प्रकार पदानुक्रम, सहयोग और संघ के ढांचे, व्यवहार के औपचारिक नियम और बातचीत के मानदंड सामाजिक मानवविज्ञान को विश्लेषण का केंद्र बनाते हैं।

ऐतिहासिक कारणों से सांस्कृतिक मानवविज्ञान संयुक्त राज्य अमेरिका में विकसित हुआ। अमेरिका में सांस्कृतिक मानवविज्ञान के संस्थापक फ्रांज बोआज थे। उनके बाद उनके छात्रों जैसे कि अल्फ्रेड क्रॉबर, मार्गरेट मीड, रूथ बेनेडिक्ट, रूथ बेंजेल और डेरिल फोर्ड, मेलविले हर्सकोविट्स, राल्फ लिंटन जैसे अन्य प्रतिष्ठित विद्वानों ने उनका अनुसरण किया। यह वास्तविक रूप से मौजूदा सामाजिक संबंधों के मुकाबले सुपर–ऑर्गेनिक (सांस्कृतिक) पहलुओं के साथ अधिक जुड़ा हुआ है क्योंकि, अमेरिका के अधिकांश देशज समुदायों को उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया में तितर–बितर कर दिया गया था या उन्हें हटा दिया गया था। संस्कृति, ऐतिहासिक और पर्यावरणीय पहलुओं की भी जांच करती है क्योंकि संस्कृति को ऐतिहासिक रूप से व्युत्पन्न और पर्यावरण के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। इस तरह एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण से हम जांच करेंगे कि सांस्कृतिक लक्षण किस प्रकार विकसित होते हैं, फैलते हैं, आस–पास के अनुकूल होते हैं और वे अर्थों की एक बड़ी प्रणाली का हिस्सा किस प्रकार बनते हैं।

जब सामाजिक संबंधपरक दृष्टिकोण में अर्थ और मूल्यों जैसे सांस्कृतिक पहलुओं पर भी चर्चा की जाती है, वे संरचनाओं पर प्राथमिक ध्यान में परिवर्तित हो जाते हैं। इसी प्रकार एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण में संरचनाएं केवल एक पृष्ठभूमि बनाती हैं जिसके विरुद्ध अर्थ और प्रतीकों का संदर्भ दिया जाता है।

प्रगति की जांच करें 2

7. सामाजिक मानवविज्ञानी जब समुदायों का अध्ययन करते हैं तब किस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं?

.....

.....

.....

8. सांस्कृतिक मानवविज्ञानी समाज के किस पहलू पर जोर देते हैं?

.....

.....

.....

9. ब्रिटेन और यूरोप के कुछ शुरुआती विद्वानों का नाम बताएं जिन्होंने सामाजिक मानवविज्ञान के क्षेत्र में काम किया था ।

.....

.....

.....

10. सांस्कृतिक मानवविज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका के आरंभिक विद्वानों में से कुछ का नाम बताइए ।

.....

.....

.....

1.3 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान का क्षेत्र

जब आप इस विषय को सीख रहे हैं तब आप सोच रहे होंगे कि सामाजिक या सांस्कृतिक मानवविज्ञानी होने का दायरा क्या है? ज्ञान के वे कौन से क्षेत्र हैं जिन्हें यह विषय छूता है? यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि किसी भी अन्य विषय की तुलना में सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान का सबसे व्यापक दायरा है, क्योंकि यह सीधे मानव परिस्थिति से संबंधित है। अगर हम स्वयं को इंसानों के रूप में पढ़ते हैं, तो यह वह विषय है जिस पर हम भरोसा करते हैं। मानवविज्ञान में, इंसानों को वृहत रूप में अथार्त समग्र रूप में देखा जाता है न कि शरीर (चिकित्सा विज्ञान) या एक दिमाग (मनोविज्ञान) या एक पशु–प्रजाति (प्राणीशास्त्र) के रूप में। बेशक इतिहास और भूगोल जैसे विषय हैं, जो सांस्कृतिक मानवविज्ञान के समीप आते हैं लेकिन वे भी मानव के सभी पहलुओं से जुड़े हुए नहीं हैं। इस तरह एक सांस्कृतिक मानवविज्ञानी के रूप में आप इतिहास का अध्ययन करेंगे लेकिन इसके अंतर्गत न केवल लिखित या दस्तावेजी इतिहास की आवश्यकता है, जिसपर इतिहासकार आमतौर पर भरोसा करते हैं, अपितु हम इसमें मौखिक इतिहास और जातीय–इतिहास को भी

शामिल करेंगे। मानवविज्ञानी, मानव को अपने अध्ययन के प्राथमिक विषय के रूप में मानते हैं, उनके लिए लोगों के इतिहास के संस्करण को जानना अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संस्करण है, जो कि क्रिया को प्रेरित करता है और लक्षित करता है। लोग अपने विश्वासों और जाति समूह के अनुसार या उनके लोगों के इतिहास के अपने संस्करण के अनुसार व्यवहार करते हैं कि लोग कैसा आचरण करेंगे। मानवविज्ञान,अकादमिक समुदाय क्या प्रलेखित करता है उसकी चिंता नही करता है अपितु, बड़े पैमाने पर आम लोगों के साथ संबंधित हैं। यह बाद का संस्करण है जो कि इतिहास को निर्धारित करता है और सामूहिक मानव क्रियाविधि को आकार देता है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मानवविज्ञान, मनोवैज्ञानिक की तरह व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है, यह केवल सामूहिक और सार्वजनिक क्षेत्र में रुचि रखता हैं। समाज और संस्कृति दोनों समाज के दायरे में आते हैं, हालांकि दोनों समाज हेतु साझा हैं परन्तु इसमें व्यक्तिगत चरित्र या प्रवृत्ति का उल्लेख नहीं है। समाज के प्रति व्यक्तियों का संबंध, इस अर्थ में कि कैसे व्यक्ति को समाज के माध्यम से आकार मिलता है, और किस प्रकार व्यक्ति अपने कार्यों और व्यवहार के माध्यम से समाज को पुनरुत्पादित करते हैं, मानवविज्ञानी हेतु चिंतन का विषय है। उदाहरण के लिए, मनुष्य की शादी ऐसे ही किसी से नहीं हो सकती है, दूसरे शब्दों में, जिसे वे अपने जीवन साथी के रूप में चुनते हैं उनकी सांस्कृतिक अनुकूलता (कंडीशनिंग) पर निर्धारित किया जाता है। भले ही कोई यह मानता है कि यह तो एक स्वतंत्र विकल्प है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी समाज में, विवाह को व्यक्तिगत पसंद से निर्धारित किया जाता है परन्तु विवाह के वास्तविक अध्ययन से संकेत मिलता है कि विवाह का बहुमत शायद कभी नस्लीय, कभी वर्ग विभाजन में भी ले जाता है। लेकिन साथ ही जैसे–जैसे समाज अंतर–नस्लीय विवाह के संबंध में मूल्यों को बदल रहा है उससे अक्सर सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन एक–दूसरे के साथ घटित होते हैं।

उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अश्वेत राष्ट्रपति के चुनाव, शहरीकरण और शिक्षा ने संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ भागों में (आमतौर पर उदारवादी दृष्टिकोण के कारण) शादी के पैटर्न में एक बड़ा परिवर्तन किया है। (बायलिक 2017) कुछ शोध केंद्रों के आंकड़ों से पता चलता है कि 2015 में अंतर–जातीय या अंतर–नस्लीय विवाह पैटर्न की दिशा में सभी नव–विवाहितों में 1967 में तीन से पांच गुना वृद्धि हुई है । 2015 में सभी विवाहित लोगों में से 10% अंतर–नस्लीय या अंतर–जातीय विवाह करने वाले दिखते हैं। बेशक इस 10% के विवाह की घटना से पता चलता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के लोग लंबे समय तक प्रजातीय विभाजन में शादी (विवाह) नहीं करते थे। जिसका ग्रॉफ हाल के दिनों में ही ऊपर उठ रहा है, फिर भी बहुत से आंकड़े संकेत देते हैं कि सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को समाज के रास्ते में आकर सही मायने में खोला जा रहा है, यहां तक कि जब वह वैचारिक रूप से ऐसा ही है। मानवविज्ञानी, खुले समाज में ऐसे अवरोधों की घटना की जांच हेतु बेहद उपयुक्त प्रशिक्षण दे रहे हैं , जहां अंतर–जातीय विवाह हेतु कोई कानूनी या सामाजिक बाधा नहीं है। तथ्य से यह भी संकेत मिलता है कि ,परिवर्तन हो रहा है । मानवविज्ञानी पूर्वाग्रहों के प्रारंभिक अस्तित्व का अध्ययन करने और परिवर्तन के गहरे कारणों का विश्लेषण करने में संलग्न होते है ।

विवाह के बदलते अर्थ, बदलते रंग, प्रतीकों और मूल्यों तथा विचारधारा में परिवर्तन की खोज सांस्कृतिक मानवविज्ञानी द्वारा किया जाता है। सामाजिक मानवविज्ञानी संरचनात्मक परिवर्तन, बदलते आर्थिक और शक्ति समीकरणों एवं पदानुक्रमों को बदलने की खोज करते है । अमेरिका में एक अश्वेत राष्ट्रपति के चुनाव, सामाजिक पदानुक्रम और सत्ता संरचनाओं में परिवर्तनों को

इंगित करता है साथ ही यह मूल्यों के सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी इंगित करता है। यह कहने की बात नहीं है कि सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञानी के बीच श्रम का ऐसा विभाजन होता है जिसे अधिकांश विद्वान इन सभी कारकों की तलाश करते है। इस तरह हम हाल के दिनों में संयुक्त शब्द सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान दोनों का उपयोग करना पसंद करते हैं।

आम तौर पर सामाजिक मानवविज्ञान समाज के पहलुओं पर केंद्रित है जैसे कि सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक संस्थाओं की अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म और कानून से संबंधित अध ययन। सामाजिक मानवविज्ञान अध्ययन का एक प्रमुख पहलू नातेदारी , परिवार और विवाह से संबंधित है। इससे संबंधित शास्त्रीय कार्यों की प्रुमख पुस्तकें थीं, *अफ्रीकन सिस्टम ऑफ किन्शिप एंड मैरिज, अफ्रीकन पोलिटिकल सिस्टम, विचक्राफ्ट अमंग द अजांदे , द न्यूर्स , न्यूर रिलिजन आदि*। सामाजिक मानवविज्ञानियों ने विभिन्न प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों का भी अध्ययन किया है। मानवविज्ञान में मार्क्सवाद को शामिल करने के साथ– साथ इतिहास के पहलू को भी मानवविज्ञान विश्लेषण में शामिल किया गया था।

सांस्कृतिक मानवविज्ञानी कई और दिशाओं में आगे बढ़ने में सक्षम हैं जिसमें अमेरिकी स्कूल ने पारिस्थितिकीय मानवविज्ञान, मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान, चिकित्सा मानवविज्ञान, भाषाई मानवविज्ञान, ऐतिहासिक मानवविज्ञान की शुरुआत की और अब हमारे पास मानवविज्ञान की कई दूसरी शाखाएं भी मौजूद हैं जैसे, उद्यम मानवविज्ञान, महिलावादी मानवविज्ञान, पर्यटन मानवविज्ञान, आपदा और जोखिम प्रबंधन मानवविज्ञान। इसके अतिरिक्त अन्य कई क्षेत्र है जिसमें मानवविज्ञानी संलग्न हैं। यहां तक कि चिकित्सा विज्ञान,अनुप्रयुक्त (एप्लाइड) मेडिसिन, या कार्यक्षेत्र(फील्ड) में दवाओं (मेडिसिन) को ले जाने में भी मानवविज्ञानी की विशेषज्ञता की आवश्यकता है। टीकों के बारे में लोगों को शिक्षित करने, मलेरिया और वेक्टर जनित रोगों की रोकथाम करने, एचआईवी– एड्स और अन्य (संक्रामक) रोगों की रोकथाम एवं प्रबंधन के लिए मानवविज्ञान की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। (स्ट्रैंग, 2009) मानवविज्ञानी सभी मामलों में मानव अस्तित्व के इन पहलुओं को गहराई से विश्लेषण और डेटा संग्रह में गुणात्मक विधि को अपनी पद्धति को लाने का प्रयत्न करते हैं। मनोविज्ञान और इतिहास जैसे पहले से मौजूद विषयों के साथ जहां हम प्रतिस्पर्धा करते है तो मानवविज्ञानी अपने अस्तित्व को उनके तरीके से न्यायसंगत बताते हैं।

मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञानी, मनोवैज्ञानिकों से अलग प्रकार के होते हैं, जबकि मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि मानव मस्तिष्क और मन सभी इंसानों में एक समान हैं। शास्त्रीय मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने भी सभी मनुष्य दिमागों को समान रूप से माना है, मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान ने व्यक्तिगत दिमाग और संस्कृति के बीच संबंधों की छानबीन करता है। (बोरगुइगनन 1979)

संस्कृति और व्यक्तित्व स्कूल के संस्थापकों के अनुसार सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान के उप–अनुशासन के रूप में मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान का गठन हुआ था, अगर हम प्रौढ़ व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले बचपन के अनुभवों के फ्रायड के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं तो, विभिन्न संस्कृतियां बच्चों का लालन–पालन और अभ्यास अलग अलग तरीके से करती हैं और एक ही संस्कृति में लालन–पालन किये गए सभी बच्चों पर एक सामूहिक संस्कृति का प्रभाव होता है। इसी कारण से कुछ व्यक्तियों में सामूहिक व्यक्तित्व के लक्षण होते हैं जो इसी तरह की प्रक्रिया से आते है। जैसे कि शिशुओं के भोजन करने, कपड़ा पहनने, शौचालय जाने और नींद आदि के पैटर्न प्रशिक्षण के लिए मोटे तौर पर सांस्कृतिक मानदंडों के माध्यम से

अनुकूलित होते हैं। उदाहरण के तौर पर दक्षिण एशिया में अधिकतर बच्चे अपनी मां के साथ सोते हैं और माता–पिता और वयस्क लोग उन्हें गोद में या पीठ पर रखते हैं। इसके विपरीत अमेरिकी समाज में शिशुओं को एक अलग कमरे में और बिस्तर में रखा जाता है और प्राम अथार्त स्ट्रॉल्र्स में ले जाया जाता है न कि गोद में। बच्चे की देख–भाल में इन बुनियादी अंतरों से वयस्क व्यक्तित्व में अंतर पैदा होने की संभावना है। समकालीन मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने काम में अंतर–सांस्कृतिक (क्रॉस कल्चरल) व्यक्तित्व लक्षणों की अवधारणा को सम्मिलित करना प्रारंभ कर दिया है। (श्वार्टज, व्हाइट और लुत्ज 1992)

प्रतिबिंबन

सिगमंड फ्रायड (1856–1939) ने मनोविश्लेषण के प्रस्ताव (मनोविज्ञान = मन और विश्लेषण = दिमाग के हिस्सों को व्यक्तिगत रूप से देखने के लिए प्रस्तावित किया कि वे कैसे संबंधित हैं)। यह पहला सिद्धांत है जो बचपन के माध्यम से विकास के चरणों का वर्णन करता है। सिद्धांत का मूल आधार यह है कि जैविक आग्रह किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने के लिए जिम्मेदार चरणों की एक श्रृंखला के माध्यम से एक व्यक्ति को स्थानांतरित करता है।

फ्रायड ने, प्रारंभिक बाल्यावस्था व्यक्तित्व विकास के सिद्धांत को उनके सार्वभौमिक मानव लक्षणों को बड़े पैमाने पर जैविक रूप से निर्धारित करने के आधार पर बताया था। फ्रायड के मुताबिक तीन चरणों में विशेष रूप से ओरल, अनल और ओडीपल शामिल हैं और सांस्कृतिक माध्यमों द्वारा हम चलना, फिरना शौचालय जाना आदि में अपने अभिभावकों से सीखते हैं।

सुप्रसिद्ध सामाजिक मानवविज्ञानी जॉन बेएटी ने उल्लेख किया है कि सामाजिक मानवविज्ञानी वास्तव में तीन विभिन्न स्तरों के आंकड़ों के बारे में बात करते हैं (i) वास्तव में क्या होता है, (ii) लोग क्या सोचते हैं तथा (iii) वे क्या सोचते हैं, उनके कानूनी एवं नैतिक मूल्य (बेएटी, मूरे और सैंडर्स 2006:)। इसतरह सर्व प्रथम सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से अंतर– जातीय विवाह को स्थापित किया गया जिसके बारे में हमने पहले ही चर्चा की है। इस प्रकार के आंकड़ो से मानवविज्ञानी संतुष्ट नहीं होते। अब तो वे लोग विभिन्न जातियों, उनके मानदंडों और बातचीत के मूल्यों और यहां तक कि उनके इतिहास और संदर्भ के बीच सामाजिक बातचीत की गहराई तक जाते हैं। सांस्कृतिक मानवविज्ञानी की तरह वे अब जाति और नैतिक पहलुओं के प्रतीकात्मक महत्व की जांच करते है । इस बातचीत में बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि लोग विवाह संस्था की व्याख्या किस प्रकार करते हैं और उसे किस प्रकार से समझते हैं। इस तरह मानवविज्ञानी बहुआयामी विश्लेषण में संलग्न होते हैं जो किसी घटना के विभिन्न आयामों को ध्यान में रखते हैं।

प्रगति की जांच करें 3

11. सामाजिक मानवविज्ञान की विषय वस्तु बताएं ।

.....

.....

.....

.....

12. सांस्कृतिक मानवविज्ञान की विषयवस्तु बताएं ।

.....

.....

.....

1.4 मानवविज्ञान की प्रासंगिकता

मानवविज्ञान सिद्धांत में यह भी स्वीकार किया जाता है कि, वास्तविक सामाजिक परिस्थितियां सतह पर दिखाई नहीं देती हैं लेकिन वास्तविकता वह नहीं होती जो दिखती है, अपितु इसकी परतें बहुत गहरी होती हैं। और इसकी वास्तविकता को देखने के लिए किसी को गहराई में जाना होता है। यही कारण है कि मानवविज्ञान तरीकों के अंतर्गत लंबी अवधि और एक विशेष स्थिति या क्षेत्र के अध्ययन की आवश्यकता होती है। इसमें गहन अध्ययन अधिकांशतः गुणात्मक होता है जहां किसी डेटा या आंकड़ों पर निर्भर रहने की बजाय असली मनुष्य पर निर्भर होता है। यही वह स्थान है जहां मानवविज्ञानी,अर्थशास्त्रियों से काफी अलग हैं। क्योंकि उनके लिए गरीबी जैसी अवधारणाएं केवल सांख्यिकीय आंकड़े नहीं हैं बल्कि वास्तविक मनुष्य के जीवन और उनके जीवन की वास्तविक स्थितियों से संबंधित हैं। इस प्रकार मानवविज्ञानी छुपे तथ्यों पर प्रकाश डालते हैं।

नृवंशविज्ञान विधि (एथेनोग्राफी) जिसे किसी विशिष्ट क्षेत्र का समग्र अध्ययन करने की मानवविज्ञान विधि के रूप में जाना जाता है, प्रायः वास्तविक लोगों के साथ समक्ष साक्षात्कार के माध्यम से तथ्य सकंलन, व्यक्तिगत आख्यान, जीवन इतिहास के रूप में तथ्यों का उपयोग किया जाता है। इसमें मानवविज्ञानी लंबे समय तक उन लोगों के साथ रहते हैं जिनका अध्ययन किया जाता है और जिनके जीवन को सूचनादाता द्वारा साझा किए जाता हैं। इसे मानवविज्ञान की भाषा में गोइंग नेटिव कहा जाता है। इस प्रकार मानवविज्ञान क्षेत्र में मानवविज्ञानी की व्यक्तिपरक बातचीत शामिल है जिसे अब किसी वस्तु के रूप में नहीं देखा जा सकता है। सूचनादाता और मानवविज्ञानी आपस में बातचीत करते हैं जहां मानवविज्ञानी की व्यक्तिपरकता को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो मानवविज्ञानी किसी प्रयोगशाला की स्थिति के अनुसार कोई निष्क्रिय, वस्तुगत, वैज्ञानिक पर्यवेक्षक नहीं हैं, वह एक सजीव इंसान है जो दूसरे मनुष्यों के संपर्क में रहता है और इस प्रकार उसकी भावनाएं जीवित रहती हैं। क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) दूसरों के साथ किसी इंसान की बातचीत है और जिसमें दोनों ओर से एक संज्ञानात्मक और अवधारणात्मक तत्व रहता है। मानवविज्ञानी की उपस्थिति इस क्षेत्र को बदल देती है क्योंकि दूसरे लोग इस क्षेत्र के निवासी होने के कारण वहां के मौजूदा विद्वान के साथ बातचीत करना शुरू करते हैं। (क्लिफोर्ड और मार्कस 1990) यह व्यक्तिपरकता जिसे तथाकथित वैज्ञानिक निष्पक्षता की कमी कहा जाता है वही मानवविज्ञान पद्धति की 'हॉल मार्क' (विशेषता) है।

मनुष्यों के साथ इस तरह की घनिष्ठ बातचीत से अक्सर वह आंकड़े सामने आते हैं जो किसी भी सतही या अल्पकालिक विधियों द्वारा कभी भी सुलभ नहीं हो सकते। इस प्रकार मानवविज्ञान का दायरा मानव जीवन के हर आयाम तक जाता है परन्तु इस तरह से इन क्षेत्रों को मानवीय चिंता और सहानुभूति के साथ उपयोग किया जाता है। इस प्रकार मानवविज्ञानी उन लोगों के पक्ष समर्थक होते हैं जिनका वे अध्ययन या प्रतिनिधित्व करते हैं, और विभिन्न मंचों पर उनके लिए संघर्ष करते हैं। मानवविज्ञानी के शोध क्षेत्र में प्रवेश करने के उपरांत वह

उनके साथ समानुभूतिपूर्ण संबंध स्थापित करता है और उनके जैसा सोचने लगता है। इस प्रकार शोधार्थी भी एक कार्यकर्ता बन जाता है या वह उस ज्ञान को लागू करता है जिसे उन्होंने दूसरे लोगों की भलाई के लिए प्राप्त किया है, उस ज्ञान को वह अपना मानने लगता है। अधिकांश मानवविज्ञानी अपने सूचनादाताओं को 'मेरे लोग' के रूप में देखते हैं और अक्सर उनके साथ आजीवन संबंध स्थापित कर लेते हैं।

एक विषय की शाखा के रूप में मानवविज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण योगदान जातिकेंद्रिकता (ethnocentrism) से आगे बढ़ना सीखना है। चूंकि सभी मनुष्यों का जीवन एक विशेष तरीके से निर्मित होता है, इसलिए लोगों के मन में यह आम धारणा है कि उनके जीवनयापन का तरीका सबसे अच्छा तरीका है। यहां तक कि यदि लोग इन अवधारणाओं को जानबूझकर नहीं समझते हैं, तो कुछ बातों को हम अपने उपयोग हेतु सामान्य के रूप में स्वीकार करते हैं और जीवनयापन के उपयुक्त तरीके पर विचार नहीं कर पाते है क्योंकि हम इस सुविधा क्षेत्र (कम्फर्ट जोन) से बाहर ही नहीं निकल पाते हैं। कुछ लोगों के लिए कई प्रकार की सांस्कृतिक प्रथाएँ और रीति–रिवाज, 'घृणास्पद', 'चौंकाने वाले' या अजीब दिखाई पड़ते हैं जबकि वे पूरी तरह से स्वीकार्य और उन लोगों के लिए 'सामान्य' हो सकते हैं जो उनका अभ्यास करते हैं। जैसे कि कुत्तें का मांस खाना, पुरुषों का स्कर्ट पहनना, महिलाओं का सिर मुंडवाना, बाल विवाह, कन्या– भ्रूण हत्या आदि प्रथाएं उन लोगों के लिए चौकाने वाली और घृणा उत्पन्न करने वाली हो सकती हैं जो ऐसा नहीं करते हैं।

दूसरी ओर मानवविज्ञानी को अपनी स्वीकृति की सीमाओं को फैलाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, भले ही वे खुद को इन रीति–रिवाजों में नहीं ढाल सकते हैं पर वे उन लोगों के लिए कम से कम इन रीति–रिवाजों को उचित ठहराने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए फेलिक्स पैडेल (2011) के उस कार्य का अध्ययन करें जिसमें उन्होंने उड़ीसा के कोंध जनजातियों के बीच मानव बलिदान को रेखांकित किया है, जहां यह दिखाया गया है कि ये रीति–रिवाज का समर्थन नहीं कर रहे हैं पर उन्होंने यह दिखाया है कि किस प्रकार ब्रिटिश प्रशासकों द्वारा इसे छिन्न–भिन्न किया गया था। जिससे संबंधित आंकड़ों का इस्तेमाल कोंध जाति को आदिम जाति और बर्बर जाति के रूप में पेश करने के लिए किया था। फेलिक्स पैडेल ने अभिलेखीय और क्षेत्र के आंकड़ों के उपयोग के माध्यम से भी प्रदर्शित किया है कि इस मामले में ब्रिटिश हस्तक्षेप और जनजातियों का उनके द्वारा निर्दयी रूप से क्रूर उत्पीड़न था जिसे मानव बलिदान के वास्तविक चित्रण को अधिक दुखयुक्त दिखाता है।

इस प्रकार मानवविज्ञानविदों का प्राथमिक कार्य वास्तविक आंकड़ों की जांच करना है और स्वतंत्र विचार के साथ रूढ़िवाद और पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर विश्लेषण करना है। मानवविज्ञानविदों के लिए समाज और संस्कृति दोनों है। अब वे इस बात के लिए दृढ़ प्रतिबद्ध हैं कि वे किसी भी सांस्कृतिक या सामाजिक प्रथा का मूल्यांकन न करें और अपने संदर्भ में चीजों को समझें। जाति–केन्द्रिकता से सार्वभौमिक मानवता की ओर जाना मानवविज्ञान का 'हॉलमार्क' है। मानवविज्ञान के विद्यार्थी के रूप में आपको विविधता की सराहना करनी चाहिए और गैर–न्यायिक बातों को सीखना चाहिए कि मनुष्य अपनी संस्कृति के अनुसार जीते हैं और संस्कृति आनुवंशिक नहीं होती है बल्कि, अलग–अलग समाज के सदस्यों के रूप में उसे अधिग्रहित किया जाता है। यह हमारी मानवीय विशेषता है कि हमारा जीवन और रीति-रिवाज एक दूसरे से अलग है और मानवविज्ञान की प्रासंगिकता यह है कि वह एक ऐसा विज्ञान है जिसमें विविधता को समझा जाता है और उसका सम्मान करना सीखा जाता है। मानवविज्ञानी दूसरे लोगों के तौर–तरीकों का बहुत सम्मान करते हैं और उनका प्रयास रहता है कि दूसरे

भी इसका प्रयास करें ताकि अधिक से अधिक लोग सांस्कृतिक विविधता की प्रासंगिकता और सहिष्णुता को समझ सकें, न कि केवल अपने ही तौर–तरीकों को जानें।

प्रगति की जांच करें 4

13. गोइंग नेटिव शब्द का वर्णन करें।

.....

.....

.....

14. व्यक्तिपरकता क्या है?

.....

.....

.....

15. मानव विज्ञान के अध्ययन करने की कोई दो प्रासंगिकता बताएं ।

.....

.....

.....

1.5 सारांश

इस ईकाई में आपने सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के बारे में कुछ मूल बातें सीखी हैं। विद्यार्थी को यह बताया गया है की समाज और संस्कृति के बीच अभिन्न संबंध है और किस प्रकार ये दोनों धरती पर मनुष्यों के रूप में हमारे अस्तित्व के हॉलमार्क हैं। संस्कृति के बिना कोई मनुष्य नहीं है और समाज के बिना वहां कोई संस्कृति नहीं हो सकती। क्योंकि हम व्यवहार, मूल्यों और प्रथाओं को समाज के सदस्यों के रूप में सीखते हैं और अगर लोग सांस्कृतिक मानदंडों के अनुसार व्यवहार नहीं करते है तो समाज के स्थायी संबंधों को एक व्यवस्था के रूप में पुनरू सृजित नहीं किया जा सकता है ।

इस प्रकार सामाजिक समूहों जैसे जाति, जनजाति और जातीय समूहों ने विवाह की संस्थाओं के माध्यम से स्वयं को पुनः प्रस्तुत करते हैं। लेकिन लोगों को सांस्कृतिक रूप से इस तरह से विवाह करने की शर्त यह है कि वे अपने समाजों को पुनः सृजित करें।

हमने सीखा है, कैसे एक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान को मानववैज्ञानिक तरीकों और कार्यप्रणाली के रूप में व्यापक दायरा मिला है और किस प्रकार वह मानव समाज और मानव व्यवहार से संबंधित लगभग किसी भी घटना को समझने में सक्षम है। इस प्रकार धर्म, राजनीति, दर्शन, मनोविज्ञान और अर्थशास्त्र सभी मानवविज्ञान के दायरे में हैं सिवाय इसके कि मानव विज्ञान समाज के इन आयामों को मानसिक रूप से मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान के विषय को उनके शास्त्रीय रूप में स्वीकार करता है। आज इतिहासकारों सहित कई लोग इसे अपना रहे हैं जिसे हम नृ–वंशविज्ञान (एथनोग्राफी) पद्धति के रूप में

जानते हैं। क्षेत्रीय कार्य (फील्डवर्क) अथवा लोगों से सीधे आंकड़ों/तथ्यों को एकत्रित करने का कार्य मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक भूगोलविद और इतिहासकार भी कर रहे हैं। पार–सांस्कृतिक (क्रॉस कल्चरल) मनोविज्ञान में भी गुणात्मक विश्लेषण और आख्यान संग्रह के मानवविज्ञान तरीकों का उपयोग किया जाता है। संस्कृति को मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक अनुसंधान में एक प्रमुख चर के रूप में देखा जाता है। मानवविज्ञानी में विभिन्न संस्कृतियों से संवाद करने की अनूठी क्षमता होती है और इसका तात्पर्य एक ही भाषा बोलना नहीं है,अपितु इसका मतलब है कि आप संज्ञानात्मक बाधा को तोड़ने में सक्षम हैं जो आम तौर पर विभिन्न संस्कृतियों या यहां तक कि वर्ग और विभिन्न सामुदायिक पृष्ठभूमि के व्यक्तियों के बीच मौजूद है। अगली इकाई में हम सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के इतिहास और विकास के पक्ष का पता लगायेगे ।

1.6 संदर्भ

बेएटी, जॉन एच.एम. (2006). *अंडरस्टेंडिंग एंड एक्सप्लेनेशन इन सोशल एंथ्रोपोलॉजी"* हेनेरेट्टा मूरे एवं टॉड सेंडर्स (संपा) एंथ्रोपोलॉजी इन थ्योरी, पृ. 148–159 ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी में प्रकाशित 10(1) (1959) पृ 45–57

बायलिक, क्रिस्टिन, (2017). की फैक्ट्स अबाउट रेस एंड मेरिज, "50 यीयर्स आफ्टर लविंगः वीर्जिनिया" www.pewresearch.org/fact-tank/2017/06/12/key-facts-about-race-and-marriage-50years-after-loving v-Virginia/; 9 अगस्त 2017 को 11:00 बजे पर देखा गया।

बारगूइग्नॉन, इरिका (1979). *साइकोलाजिकल एंथ्रोपोलॉजी एन इंट्रोडक्शन टू ह्यूमेन नेचर एंड कल्चरल डिफरेंस.* न्यूयार्कः हाल्ट, रिनेहर्ट एवं विंस्टन.

क्लिफोर्ड, जेम्स एवं जार्ज, ई मार्क्स (संपा) (1990). *राइटिंग कल्चरः द पायटिक्स एंड पालिटिक्स ऑफ इथनोग्राफी,* दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

इवांस प्रिटहार्ड, ई.ई. (1940). *द न्यूर,* ऑक्सफोड : द क्लेरेंडान प्रेस.

फोर्ट्स, मेयर, (1969). *किनशिप एंड द सोशल आर्डर,* शिकागोः एल्डाइन पब्लिशर्स.

हेरिस, मार्विन, (1985). *गुड टू ईटः रिड्ल्स ऑफ फूड एंड कल्चरः* इलिनियोसः वेवलेंड प्रेस.

कपलान, डेविड एवं रोबर्ट ए मैनर्स, (1972). *कल्चर थ्योरी.* इलिनियोसः वेवलेंड प्रेस.

लेविस, आई.एम. (1976). *सोशल एंथ्रोपोलॉजी इन पर्सपेक्टिवः द रिलेवेंस ऑफ सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* हार्मंड्सवर्थः पेंग्विन बुक्स.

मूरे, हेनरिट् एवं टॉड सेंडर्स (संपा) (2006). एंथ्रोपोलॉजी इन थ्योरीः इश्यूज इन इपीस्टेमोलाजी, यूएसएः ब्लेकवेल पब्लिशिंग.

पेडेल, फेलिक्स (2011). *सेक्रीफाइसिंग पीपलः इंवेसंस ऑफ ए ट्राइबल लेंडस्केपः* (यह संस्करण) नई दिल्लीः ओरिएंट ब्लैकस्वॉन (1995) ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

रेडक्लिफ ब्राउन, ए.आर. (1952). *स्ट्रक्चर एंड फंक्शन इन प्रिमिटिव सोसायटी.* न्यूयार्कः द फ्री प्रेस.

शैवर्ट्ज, थियोडोर, जाफरी एम. व्हाइट एवं कैथेरीन ए लूट्ज (संपा) (1993). *न्यू डायरेक्शंस इन साइकोलाजिकल एंथ्रोपोलॉजी* . कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

1.7 प्रगति की जांच के लिए उत्तर

1. किसी समूह से संबंधित होने की भावना को सामाजिक पहचान कहा जाता है। आगे समझने के लिए भाग 1.1 का संदर्भ लें ।
2. इस इकाई के भाग 1.1 को देखें ।
3. कुछ पहचान वे होते हैं, जिनके साथ हम जन्म लेते हैं इन्हें हमारे नाम, स्थिति, धर्म इत्यादि के रूप में जाना जाता है और कुछ को हम बाद में अपने जीवन में ग्रहण करते हैं। जैसे कि, हम किस प्रकार का भोजन पसंद करते हैं और किस तरह से कपड़े पहनते हैं, आदि।
4. नहीं ।
5. समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा सामाजिक मानदंडों और नियमों को अपने बड़ों से बच्चे द्वारा अधिग्रहीत किया जाता है। आगे समझने के लिए भाग 1ण्1.के पैरा 6 को पढ़ें।
6. संस्कृति एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक भाषा, प्रतीकों, संस्कृतिकरण और सामाजिकता के माध्यम से पहुँचती है ।
7. भाग 1.2 देखें ।
8. इस ईकाई के 1.2. अनुभाग को पढ़ें।
9. ए.आर .रैडक्लिफ–ब्राउन, ईई इवांस–प्रिचर्ड, ब्रोंस्लालो मालिनोव्स्की, रेमंड फर्थ और अन्य।
10. फ्रांज बोआज को संयुक्त राज्य अमेरिका में सांस्कृतिक मानवविज्ञान के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है। उनका अनुसरण उनके छात्रों द्वारा किया गया जैसे कि अल्फ्रेड क्रॉबर, मार्गरेट मीड, रुथ बेनेडिक्ट, रूथ बेंजेल डेरिल फोर्ड, मेलविले हर्सकोविट्स, राल्फ लिटन और अन्य।
11. समझने के लिए भाग 1.3 के पैरा 4 को देखें ।
12. भाग 1.3 के पैरा 5 को देखें ।
13. भाग 1.4 के अनुभाग 2 को देखें ।
14. भाग 1.4 के अनुभाग 3 को देखें ।
15. भाग 1.4 के अंतिम अनुभाग को देखें ।